

THREE WORLDS

तीन लोक



FATHER OF ALL THE SOULS IS ONE
सर्व आत्माओं का पिता एक है



शिव और शंकर में अन्तर



सूक्ष्म लोक निवासी, विनाशकारी, आकारी देवता
(रचना)



परमधाम निवासी, कल्याणकारी, निराकार परमात्मा
(रचयिता)



GOD IS NOT OMNIPRESENT परमात्मा सर्वव्यापी नहीं

यदा यदा हि धर्मस्य
श्लानिर्भवति भारत
अप्युत्थानं धर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्

परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृतां
धर्मं संस्थापनार्थाय
संभवामी युगे युगे..

"WHENEVER THE DEGRADATION OF RELIGIONS
TAKES PLACE IN BHARAT, I DESCEND IN EVERY
ERA TO ESTABLISH THE RIGHTEOUS RELIGION
AND TO DESTROY THE WICKED ONES"

प्रभुजी
दर्शन दो

O GOD!
REVEAL
YOURSELF
ONTO US

IF GOD IS
OMNIPRESENT THEN
WHO WILL MEET WHOM ?
यदि परमात्मा सर्वत्र है
तो कौन किसका दर्शन दे?

O GOD!
LIBERATE ME FROM
SORROWS

प्रभुजी
दुःख हरो !

क्या इन सभी में
परमात्मा है?

IS THERE
SUPREME SOUL
IN ALL THESE ANIMALS?

हाय ! मार
डाला

OH NO!
HE WAS KILLED

जहाँ गुणी है
वहाँ गुण अवश्य
होगा

WHEREVER THERE IS
A VIRTUOUS PERSON
THERE SHALL BE VIRTUES

ARE THE VIRTUES
OF SUPREME SOUL
OMNIPRESENT ?
क्या परमात्मा के
गुण सर्वत्र हैं?

प्रभुजी
लाज बचाओ !

O GOD!
SAVE MY
HONOUR

क्या यह परमात्मा
का कर्तव्य है?

DOES SUPREME
SOUL ACT LIKE THIS?

EIGHT POWERS OF SOUL

आत्मा की अष्ट शक्तियाँ



त्रिमूर्ति

परमात्मा शिव से प्राप्त रचयिता और रचना के बारे में इस प्रायः लुप्त ज्ञान और योग से पुनः नर से श्री नारायण या श्री राम और नारी से श्री लक्ष्मी या श्री सीता पद प्राप्त हो रहा है

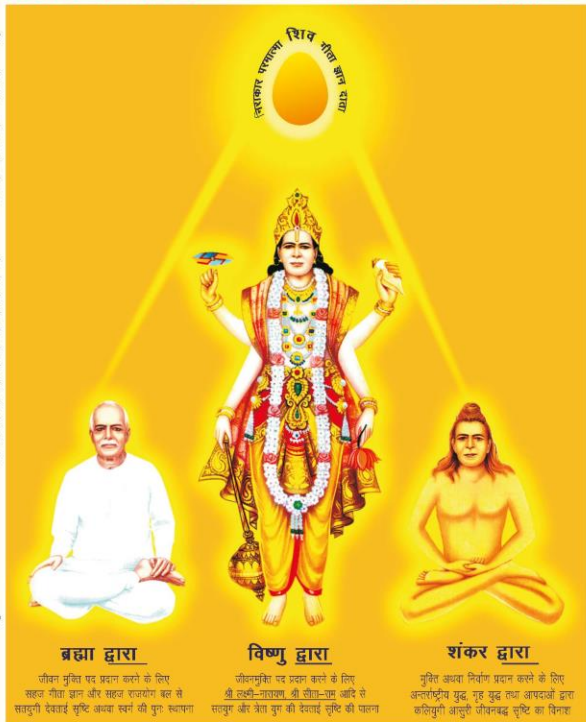
परमात्मा का नाम और रूप

ज्ञानामृत के सागर परमप्रिय भगवान शिव कहते हैं :-

प्रिय बत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं हूँ, बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त रूप 'ज्योतिर्लिंगम्' है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति शिव' भी कहलाता हूँ। मेरा अव्यक्त ज्योतिर्लिंगम् रूप न तो देवताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप के समान है और न ही मनुष्यात्माओं के स्थूल शरीर के सदृश्य है। इस कारण मुझे 'निराकार' भी कहा जाता है।

परमधाम

मैं 'निराकार' अर्थात् अशरीरी परमात्मा स्थूल देहधारी मनुष्यों की इस सृष्टि से तथा सूक्ष्म देहधारी देवताओं के लोक से भी पार 'ब्रह्मलोक' में निवास करता हूँ। सात्त्विकाम रूपी मनुष्यात्माएँ भी निर्वाण अवस्था में ब्रह्मलोक में ही ब्रह्मज्योति महत्त्व में निवास करती हैं। वहाँ से ही हर एक अशरीरी आत्मा अपने-2 समय पर इस मनुष्य-सृष्टि में आकर अपने-2 अनादि संस्कारों के अनुसार अनादि निश्चित लीला करती है। मैं गीता का निराकार भगवान भी उसी परमधाम से संगम समय पर मनुष्य-सृष्टि-मंत्र पर अपना अनादि कर्तव्य करने आता हूँ।



ब्रह्मा द्वारा

जीवन मुक्ति पद प्रदान करने के लिए सहज गीता ज्ञान और सहज राजयोग बर से सतगुरु और ज्ञान युग की देवता सृष्टि की पालन

विष्णु द्वारा

जीवनमुक्ति पद प्रदान करने के लिए श्री लक्ष्मी-नारायण श्री सीता-राम लंबे से सतगुरु और ज्ञान युग की देवता सृष्टि की पालन

शंकर द्वारा

मुक्ति अथवा निर्वाण प्रदान करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध, गृह युद्ध तथा आपदाओं द्वारा कलियुगी अस्ती जीवनाब्द सृष्टि का निवारण

अवतरण का समय

हे बत्सों! कलियुग के अन्त तक जन्म-मरण में आते-2 सभी धर्म-संस्थापक और उनकी वंशावलिओं की अन्य सभी मनुष्यात्माएँ अपनी सुख-दुःख की वारों अवस्थाओं को पार कर अति प्रबल माया अर्थात् विकारों के कारण धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, योग भ्रष्ट और आसुरी स्वभाव वाली हो जाती हैं, तब मैं, जो ही जन्म-मरण, सुख-दुःख, लेश-शेष से न्यारा, सदा एकरस, 'जागति-ज्योति', सबका पारलौकिक परमपिता-शिक्षक-गुरु, धर्मराज, त्रिमूर्ति और त्रिकालदर्शी अर्थात् सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला योगेश्वर, सर्वशक्तिमान, विश्व अधिकारी पतित-पावन हूँ, सबको माया के बन्धन से छुड़ाने, दिव्य बुद्धि और दिव्य सृष्टि द्वारा मुक्तिधाम और जीवन मुक्तिधाम की राह दिखाने और सबके विकर्म विनाश कर सद्गति करने अर्थ आत्माओं को उनके मूल, पवित्र पारलौकिक अवस्था में लाने के लिए तीन दिव्य कर्म करता और कराता हूँ।

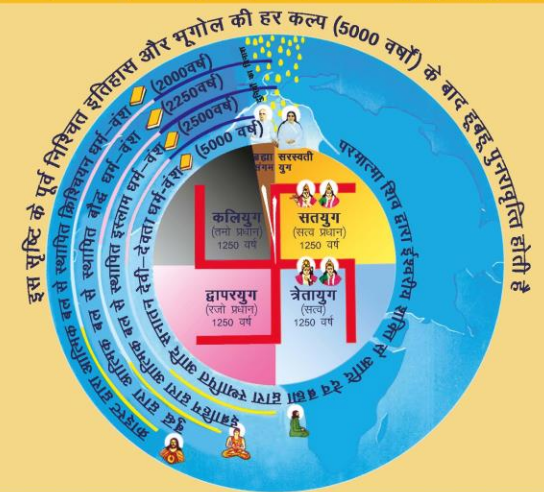
दिव्य जन्म और कर्तव्य

स्थापना : मैं कलियुग के अन्त और नए सतयुग के आदि के संगम समय परमधाम से अवतारी होकर श्री कृष्ण अर्थात् श्री नारायण के चौरासीवें जन्म के साधारण वृद्ध मनुष्य तन



रचना का रहस्य

बहुत काल से विच्छेद हुए प्रिय देवी बत्सों, पौंच विकार रूपी माया से हारे हुए, माया पर मेरे द्वारा जीते जीत का अर्थात् आधा कल्प हार, आधा कल्प जीत का पौंच मुख्य युग, पौंच मुख्य धर्मों वाला एक अनादि बना बनाया सृष्टि ज्ञाना है, जो कल्प-2 (हर 5000 वर्ष) फिर से रिपीट होता रहता है, जिसका क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य ऐक्टर, ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाला पारलौकिक परम प्रिय परमपिता-शिक्षक-सद्गुरु, पतित पावन, निराकार, वैतन्य, जन्म-मरण रहित, निराकार गीता का भगवान त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का रचयिता) शिव वा सोमनाथ हैं। मैं कल्प-कल्प-कल्प के सुहावने धार्मिक (Auspicious) संगम युग (Confluence Yug) में, सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता (Deity) धर्म की ब्रह्मा द्वारा सहज ज्ञान और सहज राजयोग बल से स्थापना, कलियुगी अनेक आसुरी धर्मों का शंकर द्वारा महाभारी महाभारत मूल लडाई और प्राकृतिक आपदाओं से विनाश और विष्णु द्वारा देवी धर्म की पालना करने एक ही बार अवतरित होता हूँ।



अब शिव भगवान कहते हैं

जो मनुष्यात्मा सबको पवित्रता-सुख-शांति देने वाले, सृष्टि के रचयिता मुझ परमात्मा को तथा सृष्टि लीला के मुख्य अभिनेताओं (ऐक्टर्स) के जन्म-पुनर्जन्म की कर्म कहानी को तथा विश्व के इतिहास के कुल समय और पुनरावृत्ति के रहस्य को अब मुझ त्रिकालदर्शी परमात्मा शिव द्वारा नहीं जानता या जान कर नर से नारायण बनने का सर्वोत्तम पुरुषार्थ नहीं करता, वह मनुष्य मंद बुद्धि है।

परमात्मा और देवताओं आदि का यह चित्र दिव्य चक्षु द्वारा साक्षात्कार तथा दिव्य बुद्धि द्वारा अनुभव ही के अक्षार पर बनाया गया है।

सकलान्तरि मुख्य केन्द्र

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विज्ञान विद्यालय (ज्ञान सध) पाण्डित्य भवन, माण्ड्यूर बावू, (सोहनस्थान)

सर्वभगवान् लीन अणु आणविक परितर आणविक ईश्वरीय विज्ञान विद्यालय

1. 100, 200, 300, 400, 500, 600, 700, 800, 900, 1000, 1100, 1200, 1300, 1400, 1500, 1600, 1700, 1800, 1900, 2000, 2100, 2200, 2300, 2400, 2500, 2600, 2700, 2800, 2900, 3000, 3100, 3200, 3300, 3400, 3500, 3600, 3700, 3800, 3900, 4000, 4100, 4200, 4300, 4400, 4500, 4600, 4700, 4800, 4900, 5000, 5100, 5200, 5300, 5400, 5500, 5600, 5700, 5800, 5900, 6000, 6100, 6200, 6300, 6400, 6500, 6600, 6700, 6800, 6900, 7000, 7100, 7200, 7300, 7400, 7500, 7600, 7700, 7800, 7900, 8000, 8100, 8200, 8300, 8400, 8500, 8600, 8700, 8800, 8900, 9000, 9100, 9200, 9300, 9400, 9500, 9600, 9700, 9800, 9900, 10000, 10100, 10200, 10300, 10400, 10500, 10600, 10700, 10800, 10900, 11000, 11100, 11200, 11300, 11400, 11500, 11600, 11700, 11800, 11900, 12000, 12100, 12200, 12300, 12400, 12500, 12600, 12700, 12800, 12900, 13000, 13100, 13200, 13300, 13400, 13500, 13600, 13700, 13800, 13900, 14000, 14100, 14200, 14300, 14400, 14500, 14600, 14700, 14800, 14900, 15000, 15100, 15200, 15300, 15400, 15500, 15600, 15700, 15800, 15900, 16000, 16100, 16200, 16300, 16400, 16500, 16600, 16700, 16800, 16900, 17000, 17100, 17200, 17300, 17400, 17500, 17600, 17700, 17800, 17900, 18000, 18100, 18200, 18300, 18400, 18500, 18600, 18700, 18800, 18900, 19000, 19100, 19200, 19300, 19400, 19500, 19600, 19700, 19800, 19900, 20000, 20100, 20200, 20300, 20400, 20500, 20600, 20700, 20800, 20900, 21000, 21100, 21200, 21300, 21400, 21500, 21600, 21700, 21800, 21900, 22000, 22100, 22200, 22300, 22400, 22500, 22600, 22700, 22800, 22900, 23000, 23100, 23200, 23300, 23400, 23500, 23600, 23700, 23800, 23900, 24000, 24100, 24200, 24300, 24400, 24500, 24600, 24700, 24800, 24900, 25000, 25100, 25200, 25300, 25400, 25500, 25600, 25700, 25800, 25900, 26000, 26100, 26200, 26300, 26400, 26500, 26600, 26700, 26800, 26900, 27000, 27100, 27200, 27300, 27400, 27500, 27600, 27700, 27800, 27900, 28000, 28100, 28200, 28300, 28400, 28500, 28600, 28700, 28800, 28900, 29000, 29100, 29200, 29300, 29400, 29500, 29600, 29700, 29800, 29900, 30000, 30100, 30200, 30300, 30400, 30500, 30600, 30700, 30800, 30900, 31000, 31100, 31200, 31300, 31400, 31500, 31600, 31700, 31800, 31900, 32000, 32100, 32200, 32300, 32400, 32500, 32600, 32700, 32800, 32900, 33000, 33100, 33200, 33300, 33400, 33500, 33600, 33700, 33800, 33900, 34000, 34100, 34200, 34300, 34400, 34500, 34600, 34700, 34800, 34900, 35000, 35100, 35200, 35300, 35400, 35500, 35600, 35700, 35800, 35900, 36000, 36100, 36200, 36300, 36400, 36500, 36600, 36700, 36800, 36900, 37000, 37100, 37200, 37300, 37400, 37500, 37600, 37700, 37800, 37900, 38000, 38100, 38200, 38300, 38400, 38500, 38600, 38700, 38800, 38900, 39000, 39100, 39200, 39300, 39400, 39500, 39600, 39700, 39800, 39900, 40000, 40100, 40200, 40300, 40400, 40500, 40600, 40700, 40800, 40900, 41000, 41100, 41200, 41300, 41400, 41500, 41600, 41700, 41800, 41900, 42000, 42100, 42200, 42300, 42400, 42500, 42600, 42700, 42800, 42900, 43000, 43100, 43200, 43300, 43400, 43500, 43600, 43700, 43800, 43900, 44000, 44100, 44200, 44300, 44400, 44500, 44600, 44700, 44800, 44900, 45000, 45100, 45200, 45300, 45400, 45500, 45600, 45700, 45800, 45900, 46000, 46100, 46200, 46300, 46400, 46500, 46600, 46700, 46800, 46900, 47000, 47100, 47200, 47300, 47400, 47500, 47600, 47700, 47800, 47900, 48000, 48100, 48200, 48300, 48400, 48500, 48600, 48700, 48800, 48900, 49000, 49100, 49200, 49300, 49400, 49500, 49600, 49700, 49800, 49900, 50000, 50100, 50200, 50300, 50400, 50500, 50600, 50700, 50800, 50900, 51000, 51100, 51200, 51300, 51400, 51500, 51600, 51700, 51800, 51900, 52000, 52100, 52200, 52300, 52400, 52500, 52600, 52700, 52800, 52900, 53000, 53100, 53200, 53300, 53400, 53500, 53600, 53700, 53800, 53900, 54000, 54100, 54200, 54300, 54400, 54500, 54600, 54700, 54800, 54900, 55000, 55100, 55200, 55300, 55400, 55500, 55600, 55700, 55800, 55900, 56000, 56100, 56200, 56300, 56400, 56500, 56600, 56700, 56800, 56900, 57000, 57100, 57200, 57300, 57400, 57500, 57600, 57700, 57800, 57900, 58000, 58100, 58200, 58300, 58400, 58500, 58600, 58700, 58800, 58900, 59000, 59100, 59200, 59300, 59400, 59500, 59600, 59700, 59800, 59900, 60000, 60100, 60200, 60300, 60400, 60500, 60600, 60700, 60800, 60900, 61000, 61100, 61200, 61300, 61400, 61500, 61600, 61700, 61800, 61900, 62000, 62100, 62200, 62300, 62400, 62500, 62600, 62700, 62800, 62900, 63000, 63100, 63200, 63300, 63400, 63500, 63600, 63700, 63800, 63900, 64000, 64100, 64200, 64300, 64400, 64500, 64600, 64700, 64800, 64900, 65000, 65100, 65200, 65300, 65400, 65500, 65600, 65700, 65800, 65900, 66000, 66100, 66200, 66300, 66400, 66500, 66600, 66700, 66800, 66900, 67000, 67100, 67200, 67300, 67400, 67500, 67600, 67700, 67800, 67900, 68000, 68100, 68200, 68300, 68400, 68500, 68600, 68700, 68800, 68900, 69000, 69100, 69200, 69300, 69400, 69500, 69600, 69700, 69800, 69900, 70000, 70100, 70200, 70300, 70400, 70500, 70600, 70700, 70800, 70900, 71000, 71100, 71200, 71300, 71400, 71500, 71600, 71700, 71800, 71900, 72000, 72100, 72200, 72300, 72400, 72500, 72600, 72700, 72800, 72900, 73000, 73100, 73200, 73300, 73400, 73500, 73600, 73700, 73800, 73900, 74000, 74100, 74200, 74300, 74400, 74500, 74600, 74700, 74800, 74900, 75000, 75100, 75200, 75300, 75400, 75500, 75600, 75700, 75800, 75900, 76000, 76100, 76200, 76300, 76400, 76500, 76600, 76700, 76800, 76900, 77000, 77100, 77200, 77300, 77400, 77500, 77600, 77700, 77800, 77900, 78000, 78100, 78200, 78300, 78400, 78500, 78600, 78700, 78800, 78900, 79000, 79100, 79200, 79300, 79400, 79500, 79600, 79700, 79800, 79900, 80000, 80100, 80200, 80300, 80400, 80500, 80600, 80700, 80800, 80900, 81000, 81100, 81200, 81300, 81400, 81500, 81600, 81700, 81800, 81900, 82000, 82100, 82200, 82300, 82400, 82500, 82600, 82700, 82800, 82900, 83000, 83100, 83200, 83300, 83400, 83500, 83600, 83700, 83800, 83900, 84000, 84100, 84200, 84300, 84400, 84500, 84600, 84700, 84800, 84900, 85000, 85100, 85200, 85300, 85400, 85500, 85600, 85700, 85800, 85900, 86000, 86100, 86200, 86300, 86400, 86500, 86600, 86700, 86800, 86900, 87000, 87100, 87200, 87300, 87400, 87500, 87600, 87700, 87800, 87900, 88000, 88100, 88200, 88300, 88400, 88500, 88600, 88700, 88800, 88900, 89000, 89100, 89200, 89300, 89400, 89500, 89600, 89700, 89800, 89900, 90000, 90100, 90200, 90300, 90400, 90500, 90600, 90700, 90800, 90900, 91000, 91100, 91200, 91300, 91400, 91500, 91600, 91700, 91800, 91900, 92000, 92100, 92200, 92300, 92400, 92500, 92600, 92700, 92800, 92900, 93000, 93100, 93200, 93300, 93400, 93500, 93600, 93700, 93800, 93900, 94000, 94100, 94200, 94300, 94400, 94500, 94600, 94700, 94800, 94900, 95000, 95100, 95200, 95300, 95400, 95500, 95600, 95700, 95800, 95900, 96000, 96100, 96200, 96300, 96400, 96500, 96600, 96700, 96800, 96900, 97000, 97100, 97200, 97300, 97400, 97500, 97600, 97700, 97800, 97900, 98000, 98100, 98200, 98300, 98400, 98500, 98600, 98700, 98800, 98900, 99000, 99100, 99200, 99300, 99400, 99500, 99600, 99700, 99800, 99900, 100000, 100100, 100200, 100300, 100400, 100500, 100600, 100700, 100800, 100900, 101000, 101100, 101200, 101300, 101400, 101500, 101600, 101700, 101800, 101900, 102000, 102100, 102200, 102300, 102400, 102500, 102600, 102700, 102800, 102900, 103000, 103100, 103200, 103300, 103400, 103500, 103600, 103700, 103800, 103900, 104000, 104100, 104200, 104300, 104400, 104500, 104600, 104700, 104800, 104900, 105000, 105100, 105200, 105300, 105400, 105500, 105600, 105700, 105800, 105900, 106000, 106100, 106200, 106300, 106400, 106500, 106600, 106700, 106800, 106900, 107000, 107100, 107200, 107300, 107400, 107500, 107600, 107700, 107800, 107900, 108000, 108100, 108200, 108300, 108400, 108500, 108600, 108700, 108800, 108900, 109000, 109100, 109200, 109300, 109400, 109500, 109600, 109700, 109800, 109900, 110000, 110100, 110200, 110300, 110400, 110500, 110600, 110700, 110800, 110900, 111000, 111100, 111200, 111300, 111400, 111500, 111600, 111700, 111800, 111900, 112000, 112100, 112200, 112300, 112400, 112500, 112600, 112700, 112800, 112900, 113000, 113100, 113200, 113300, 113400, 113500, 113600, 113700, 113800, 113900, 114000, 114100, 114200, 114300, 114400, 114500, 114600, 114700, 114800, 114900, 115000, 115100, 115200, 115300, 115400, 115500, 115600, 115700, 115800, 115900, 116000, 116100, 116200, 116300, 116400, 116500, 116600, 116700, 116800, 116900, 117000, 117100, 117200, 117300, 117400, 117500, 117600, 117700, 117800, 117900, 118000, 118100, 118200, 118300, 118400, 118500, 118600, 118700, 118800, 118900, 119000, 119100, 119200, 119300, 119400, 119500, 119600, 119700, 119800, 119900, 120000, 120100, 120200, 120300, 120400, 120500, 120600, 120700, 120800, 120900, 121000, 121100, 121200, 121300, 121400, 121500, 121600, 121700, 121800, 121900, 122000, 122100, 122200, 122300, 122400, 122500, 122600, 122700, 122800, 122900, 123000, 123100, 123200, 123300, 123400, 123500, 123600, 123700, 123800, 123900, 124000, 124100, 124200, 124300, 124400, 124500, 124600, 124700, 124800, 124900, 125000, 125100, 125200, 125300, 125400, 125500, 125600, 125700, 125800, 125900, 126000, 126100, 126200, 126300, 126400, 126500, 126600, 126700, 126800, 126900, 127000, 127100, 127200, 127300, 127400, 127500, 127600, 127700, 127800

लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना

परमात्मा (परम+आत्मा) का परिचय

ज्ञान सागर, पतित पावन, सर्व के सद्गतिदाता, गीता ज्ञान दाता शिव भगवानुवाच :-

हे वत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं हूँ। मेरा नाम **'शिव'** है, रूप अव्यक्त ज्योतिर्बिन्दु है, अखंड ज्योति ब्रह्मनहातत्व मेरा और तुम आत्माओं का निवास स्थान है। ब्रह्म, विष्णु और शंकर देवताओं का भी रचयिता होने के कारण मैं **'त्रिमूर्ति शिव'** भी कहलाता हूँ।

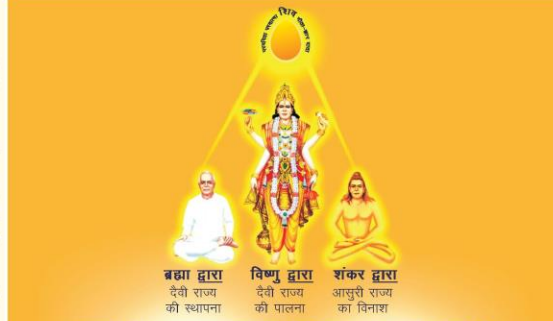
अब मैं प्रजापिता ब्रह्म के साधारण वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करके मनुष्य सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का सहज ज्ञान तथा राजयोग सिखाकर तुम भारतवासियों को पुनः पतित से पावन बना रहा हूँ। इस अहिंसक ज्ञान और योग बल से स्वर्ग या वैकुण्ठ का सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दैवी रामराज्य, जो भारत के कॉंग्रेस पति बापू गांधी जी चाहते थे, सो मैं पांडवपति, सृष्टि का बापूजी, ब्रह्मा मुखवंशावली शिवशक्ति-पांडव सेना द्वारा स्थापन कर रहा हूँ।

साथ ही साथ महादेव शंकर द्वारा प्रेरित होमनहार कल्याणकारी, महामारी महामारत लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का महाविनाश कराकर सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति या शांतिधाम जाने का द्वार खोल रहा हूँ।

एकज भूल

प्रिय वत्सों ! 5000 वर्ष पूर्व महामारत के समय मैंने ही अविनाशी ज्ञान सुनाया था जिसका यादगार शास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता गाया जाता है; परंतु भारतवासियों की सबसे बड़ी भूल यही है कि सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता पर मुझ ज्ञान-सागर, गीता-ज्ञान दाता, दिव्य चक्र विधाता, पतित-पावन, जन्म-मरण रहित, सदा मुक्त, सभी धर्म वालों के गति-सद्गति दाता परमपिता परमात्मा शिव का नाम बदल 84 जन्म लेने वाले, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सतोप्रधान सतयुग के प्रथम राजकुमार श्री कृष्ण (जिसने स्वयं इस गीता द्वारा यह पद पाया है) का नाम लिख कर भगवद्गीता को ही खंडन कर दिया है। इस कारण ही भारतवासी मेरे से योग भ्रष्ट हो, धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, पतित, कंगाल, दुःखी बन गए हैं।

यदि भारत के विद्वान, आचार्य, पंडित यह भूल न करते तो सृष्टि के सभी धर्म वाले श्रीमद्भगवद्गीता को मुझ, निर्वाण धाम ले जाने वाले पंडे ,**स्पष्टमंत्रजवत - ङनपकवद्ध परमप्रिय परमपिता शिव के महावाक्य समझ कितने प्रेम और श्रद्धा से अपना धर्म शास्त्र समझ पढ़ते और भारत को मुझ परमपिता की जन्मभूमि, ङकवरे उपवाजी ङसकवरे समझ इसको अपना सर्वोत्तम तीर्थ स्थान मानते।**



सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है



संवत् 1 से 2500 वर्ष
सतयुगी विश्व महाराजन श्री नारायण तथा विश्व महारानी श्री लक्ष्मी
स्वयंवर पूर्व महाराजकुमार श्री कृष्ण तथा महाराजकुमारी श्री राधा



ईश्वरीय संदेश

आने वाले 10 वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अन्त होने वाला है तथा होमनहार विश्वयुद्ध के परचात् सतयुगी सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का राज्य रीछ ही आने वाला है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों और ब्रह्माकुमार

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के 84 जन्मों की सत्य कहानी शिव भगवानुवाच-

प्रिय वत्सों ! आज से 5000 वर्ष पहले सतयुग की आदि में इस ही भारत पर पूज्य राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी और राजराजेश्वर श्री नारायण अटल, अखंड, निर्विघ्न, सम्पूर्ण, सुख-शांति सम्पन्न राज्य करते थे। स्वयंवर के पूर्व इन्हों का नाम श्री राधे और श्री कृष्ण था। वे सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक थे। इन्होंने सतयुग के 1250 वर्षों में सूर्यवंशी देवता कुल में 8 जन्म लिए और त्रेतायुग के 1250 वर्षों में चंद्रवंशी कुल में राज्य-भाग्य सहित 12 जन्म लिए। द्वार और कलियुग के 2500 वर्षों में वैश्य और शूद्र कुल में शिरोमणि भक्त राजा-यानी अथवा प्रजा कुल में 63 जन्म लिए।

अब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग में श्री नारायण के अंतिम 84 वें जन्म के साधारण तन की वानप्रस्थ अवस्था में मैं (निराकार शिव परमात्मा) ने दिव्य प्रवेश कर इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा है और श्री लक्ष्मी का वर्तमान 84 वें जन्म ब्रह्मा मुखवंशावली ब्रह्माकुमारी का है जिसका नाम मैंने जगदम्बा सरस्वती रखा है और कल्प पहले की तरह ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान सिखलाकर, फिर से नई सतयुगी दैवी दुनियाँ, स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ की पुनः स्थापना कर रहा हूँ। यही प्रजापिता ब्रह्मा और उनकी मुख सन्तान ब्रह्माकुमारी सरस्वती अपने तीव्र पुरुषार्थ से भविष्य जन्म में फिर से वही सतयुग के पूज्य विश्व महाराजन राजराजेश्वर श्री नारायण और विश्व महारानी राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त करेंगे।

प्रिय वत्सों ! अब मुझ विश्व के बापूजी को सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शांति सम्पन्न सत्य दैवी स्वराज्य स्थापन करने में जो कमल पुष्प समान गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए देह सहित देह के सभी संबंधियों से बुद्धि योग तोड़ मेरे साथ योगयुक्त होंगे अर्थात् राजयोगी बनेंगे और पवित्र रहेंगे वही भविष्य आधा कल्प (2500 वर्ष) में 21 जन्मों तक सतयुगी सूर्यवंशी और त्रेतायुगी चन्द्रवंशी कुल में ऐसा नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी अर्थात् मनुष्य से देवता पद प्राप्त करेंगे।

(वर्तमान) मुख्य केन्द्र
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन, माचण्ट आबू (राजस्थान)

(वर्तमान कालीन) अन्य आध्यात्मिक परिवार
आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

- दिल्ली: विजय विहार, पी. रिटाल, रोहिणी की. 8 के पास, दिल्ली-110085
- फर्रुखाबाद: 5/26A सिकंदरबाग, वि. फर्रुखाबाद (उ.प्र.), 209625
- कम्पिल: नेहरु नगर, गंगा रोड, ग्रा.पो. कम्पिल, वि. फर्रुखाबाद (उ.प्र.), 207505
- जयपुर: तहसील, हीरानगर, पी. ङकवरेवाला, वि. कडवा, जयपुर-302014
- पारसीपट्ट: #3344 डोरोपल कोमलेश्वर, सैक्टर 44-2 पी. डूबई, चण्डीगढ़ (पंजाब)-160047
- कोलकाता: C.L. 249 सैक्टर 2, साइट लेक सिटी, कोलकाता (वे. बंगाल), 700091
- मुंबई: पाटील हाउस, आजाद चौक, खारीगाव, पी. कल्याण, वि. ठाणे, मुंबई (महारा.), 400605
- हैदराबाद: 29/3 R.T., प्रकाश नगर, पी. वेगमेट, हैदराबाद (आंध्र), 500016
- बैंगलोर: शिवज्योति निवस, 138 फर्स्ट फ्लोर, पी. दूरवाणी नगर, बैंगलोर (कर्ना.), 560016

कल्प वृक्ष

इस कल्प वृक्ष द्वारा, मनुष्य-सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के विराट रूप के साक्षात्कार से मनुष्य 'नष्टमोहः स्मृतिलब्धः' और 'मन्मनाभव' होकर विकर्माजीत चक्रवर्ती देवी स्वराज्य पद पाता है

कल्प वृक्ष का बीज

गीता के निराकार भगवान 'ज्योतिर्लिङ्गम् शिव' ब्रह्मा जी के मुख कमल द्वारा कहते हैं:-

हे वत्सो! यह विराट मनुष्य-सृष्टि एक जलटे वृक्ष के समान है। मैं इसका अविनाशी बीजरूप हूँ और इस सृष्टि के सूर्य और तारों के प्रकाश के भी पार ब्रह्मलोक में निवास करता हूँ। मैं अव्यक्तमूर्त परमात्मा इस व्यक्त सृष्टि में सर्वव्यापक नहीं हूँ; बल्कि जैसे एक साधारण बीज में सारे वृक्ष के आदि, मध्य तथा अन्त के विकास के संस्कार होते हैं वैसे ही मुझ में भी इस सृष्टि का त्रिकालिक ज्ञान है। अतः केवल मैं ही सर्वज्ञ और त्रिकालदर्शी हूँ। इस कारण मैं ही इस रचना का सत्य ज्ञान पुराने वृक्ष के अन्त और नार के पुनः स्थापना के समय देता हूँ।

हे वत्सो! प्रत्येक साधारण वृक्ष का बीज एक ही होता है। इसी प्रकार मैं बीजरूप परमात्मा भी एक ही हूँ। अन्य सभी मनुष्य मुझ भगवान का रूप नहीं; बल्कि मुझ अनादि और अपरिवर्तनीय बीजरूप की सत्य रचना है। इस रचना रूपी वृक्ष को मिथ्या मानना मानो मुझ बीजरूपी परमात्मा को मिथ्या मानना है।

कल्प वृक्ष की आदि

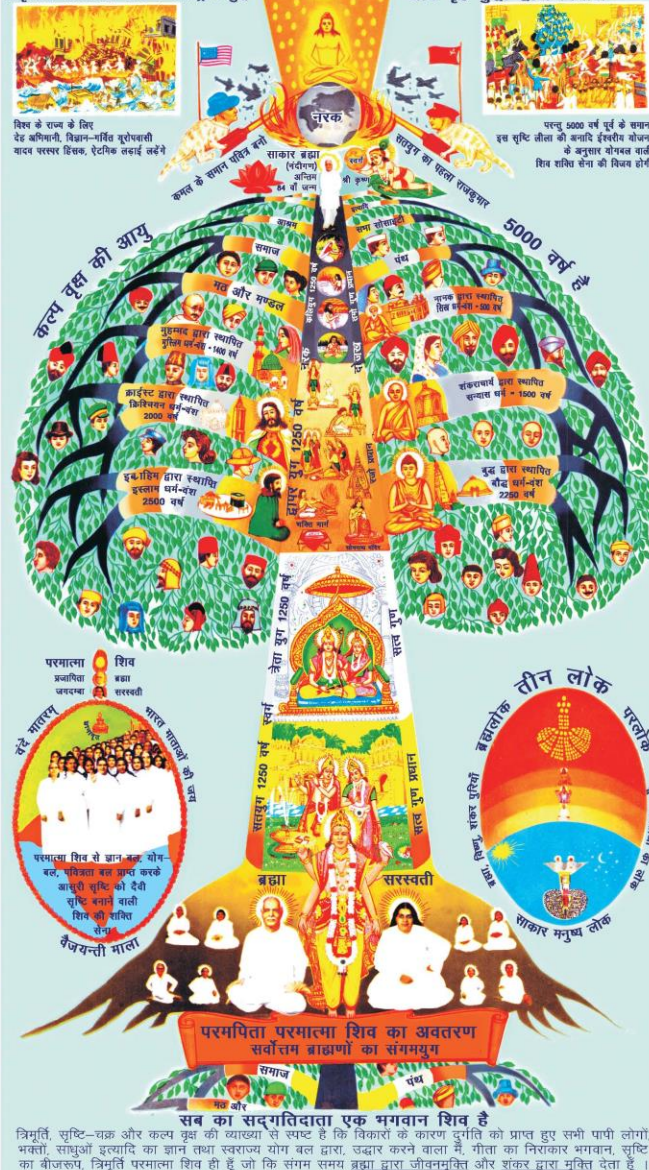
हे वत्सो! कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय मैं आदि देव ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा गीता ज्ञान और योग की शिक्षा से सतयुगी और त्रेतायुगी सत्त्वगुणी देवी सृष्टि की स्थापना करता हूँ। उन दोनों युगों की सृष्टि को 'ब्रह्मा का दिन' कहा जाता है। उस सृष्टि में विकार, दुःख तथा अशांति नाम मात्र भी नहीं होती। अतः उसे 'स्वर्ग' कहते हैं।

कल्प वृक्ष का मध्य

हापर युग से विकारों, अशांति तथा दुःखों का आरम्भ होता है। उस समय से इस्लाम मत, बुद्ध मत, ईसाई मत आदि एक-दूसरे के परस्पर स्थिति होने लगते हैं और भक्ति, शास्त्र, यज्ञ, तप, वैराग्य, अनेक प्रकार के योग, कर्मकाण्ड इत्यादि शुरू होते हैं; परन्तु मैं वेदों, शास्त्रों अथवा इन मार्गों से नहीं मिलता हूँ। भक्तों, साधकों की मनोकामना भी मैं ही अत्यन्त काल के लिए पूर्ण करता हूँ और उनके इष्ट का साक्षात्कार भी करा देता हूँ। दुर्गति के इन दो युगों को 'ब्रह्मा की रात्रि' और इस काल की सृष्टि को 'नरक' कहते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं और अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध

निर्वाण धाम और गृह युद्धों द्वारा विनाश



कल्प वृक्ष का अन्त

कलियुग के अन्त तक जब सभी मनुष्यात्माएँ पतित हो जाती हैं और यह मनुष्य-सृष्टि-रूपी वृक्ष पूर्ण बुद्धि को प्राप्त हो जर्जरभूत हो जाता है, तब मैं सतयुगी देवी सृष्टि का कलम लगाने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के मायशास्त्री रथ अर्थात् तन में अपने परमधाम से आकर अवतरित होता हूँ और भारत की माताओं, कन्याओं, गोपियों अथवा शक्तियों (जिन्हें कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों भी कहा जाता है) को ज्ञानामृत का कलश देता हूँ। तब ही मैं निज अव्यक्त रूप का, तीनों देवताओं के वास्तविक रूपों का, वैकुण्ठ का, महाविनाश का साक्षात्कार भी करा देता हूँ।

वैजयन्ती माला व गंगारि

इन्हीं ज्ञान गंगाओं अथवा योगबल वाली शक्तियों की अलौकिक सेवा के कारण भारत में कन्याओं अथवा शक्तियों की महिमा है। वैजयन्ती माला के 108 मण्डके इन्हीं कन्याओं, माताओं तथा गोपों-पाण्डवों के, युगल मण्डला लक्ष्मी-नारायण का तथा फूल गुंज निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक है।

पुनरावृत्ति- फिर द्वापरयुग में जबकि आदि सनातन देवी धर्म वाले लोग विकारी हो जाते हैं तथा इस्लाम, बुद्ध, क्रिश्चियन मत आदि स्थापन होकर कलियुग के अन्त तक बुद्धि को प्राप्त होते हैं, तब मैं पुनः स्वयं अनेक अधर्म विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता सत्धर्म की पुनर्स्थापना का ईश्वरीय कर्तव्य करता और करता हूँ। इस प्रकार अनादि काल से पाँच हजार वर्षों का यह सृष्टि-चक्र कल्प-2 पुनरावृत्त होता है।

अतः मुझे इस मनुष्य लोक में सर्वव्यापी समझना महान् मूल है। यदि मैं मनुष्य लोक में सर्वव्यापी होता तो न कभी धर्म की रूपाति होती, न युग परिवर्तन होता, न ही कोई मनुष्य विकारी, दुःखी, अशांत होता।

परमात्मा का पुनः अवतरण

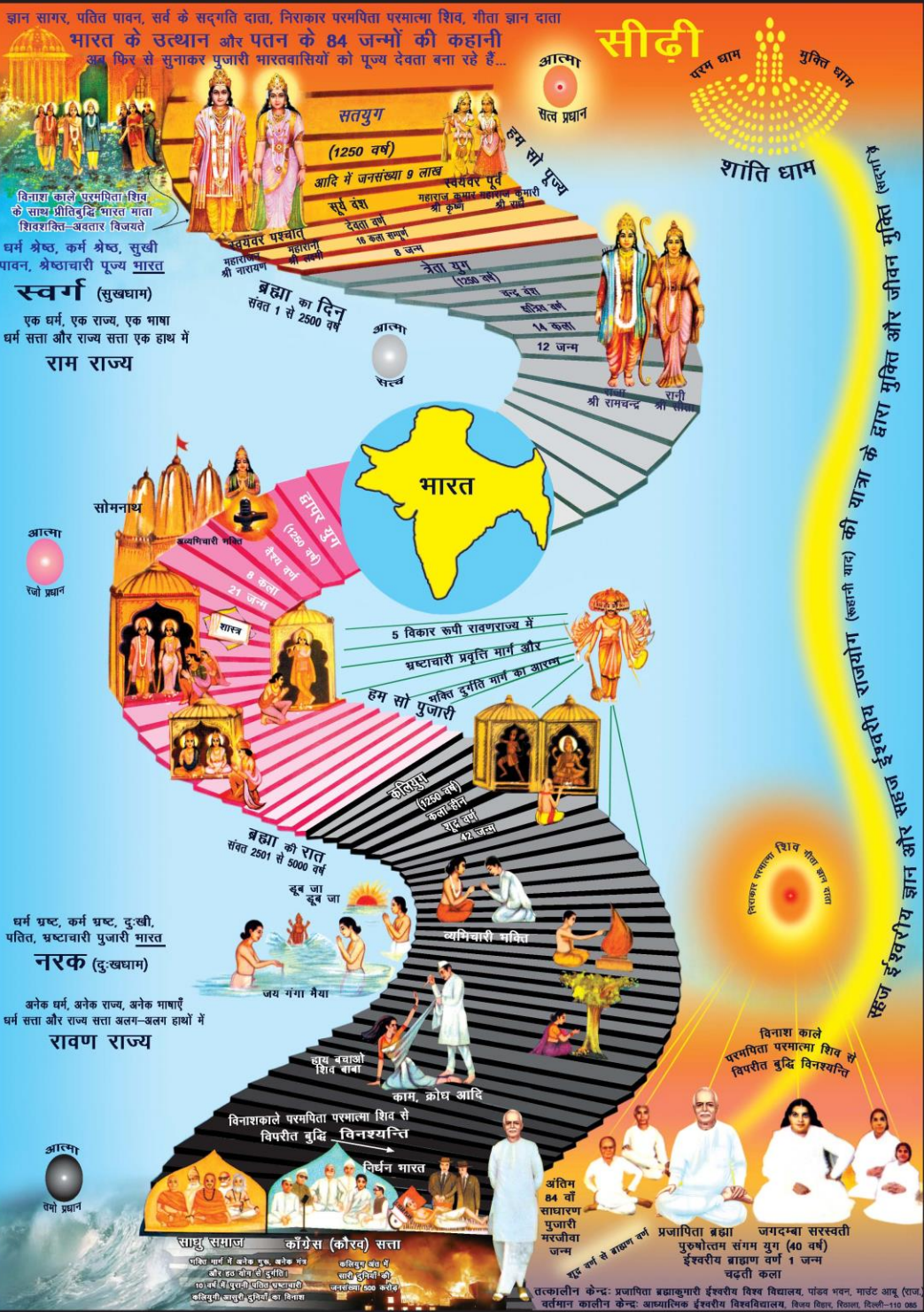
वत्सो! स्पष्ट है कि अब सभी आत्माएँ तथा सभी धर्म-वंश अपनी-2 स्वर्ण, रजत, तांबू तथा लोह अवस्थाओं को पार कर चुकी हैं और अब सभी अपनी तमोस्थान तथा आसुरी संस्कारों वाली अवस्था में हैं। जिस ज्ञान और योग द्वारा मैंने पहले भारत में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण तथा श्री सीता-श्री राम का देवी स्वरूप स्थापन किया था वह अब प्रायः लोप हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप अब भारत कंगाल मुहताज हो गया है। अतः सतयुग देवी सृष्टि की स्थापना अर्थ में पुनः अवतरित हुआ हूँ।

भगवान शिव कहते हैं :-

मनुष्यात्माओं ने तो संसार में मिथ्या ज्ञान फैलाया है कि आत्मा ही शिव है, परमात्मा सर्वव्यापी है, आत्मा निर्लेप है, मनुष्यात्मा 84 लाख योनियों धारण करती है, कल्प की आयु करोड़ों वर्ष है, गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने द्वापरयुग में दिया, श्री कृष्ण को 108 पटरानियों थीं, श्री राम की सीता चुराई गई इत्यादि, इत्यादि। इस मिथ्या ज्ञान से तो उन्होंने मनुष्यों को मुझ से विमुख कर मुक्ति और जीवनमुक्ति से वंचित किया है।

(तत्कालीन) मुख्य केन्द्र
ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन
माउण्ट आर्ब (राजस्थान)
भारत वर्ष

(हर्षानकलीन) बन वास्तविक परीक्षा
वास्तविक ईश्वरीय विश्व विद्यालय
1. A-1, 20-202, विद्यापीठ, रिवाज, दिल्ली-110 085
2. 5/2A, विद्यापीठ, रिवाज-नरसिंहपुर-208 625 (यूपी)
3. राम-भवन, रिवाज-नरसिंहपुर-207 826 (यूपी)
और अन्य, कच्छीपूर, कोकना, मुंबई, देहली, मैसूर



मनुष्या आत्मा ८४ लाख योनिया
धारण नहीं करती



